उपभोक्ता के व्यवहार, रुचि, पैमाने आदि में किसी प्रकार की परिवर्तन नहीं होना चाहिए, यदि ऐसा होता है तो नियम लागू नहीं होगा।

3) मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता का स्थिर होना (MARGINAL UTILITY OF MONEY IS CONSTANT) - मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता को समान मान लिया गया है। संक्षेप में, मुद्रा की मात्रा में कम अथवा ज्यादा होने पर भी उसकी सीमान्त उपयोगिता यथास्थिर रहेगी।

4) उपयोगिता को मुद्रा रूपी पैमाने से मापा जा सकता है (UTILITY CAN BE MEASURED IN TERMS OF MONEY).

व्याख्या (EXPLANATION) :→ (हम यह एक काल्पनिक तालिका तथा रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कर सकते हैं। उदाहरण के अनुसार, एक उपभोक्ता के पास 10रु० है, इस समय उसे दो वस्तुओं की आवश्यकता है। ये दो वस्तुएँ हैं - गेहूँ तथा चावल। हम यह मान लेते हैं कि गेहूँ तथा चावल 1 रु० / किलो० है। इस प्रकार उपभोक्ता अपने 10 रुपयों से गेहूँ

तथा चावल की 10 इकाइयों को क्रय कर पाएगा। गेहूँ तथा चावल के उपभोग करने से उपभोक्ता को जो उपयोगिताएँ प्राप्त हो रही है उन्हें तालिका के द्वारा दिखाया गया है-

व्यय की गई द्रव्य की इकाईयां (Unit)	गेहूँ से मिलने वाली उपयोगिता (Utility from wheat)	चावल से मिलने वाली उपयोगिता (Utility from rice)
1	60	50
2	55	40
3	45	28
4	35	25
5	30	25.20
6	25	15
7	16	14
8	15	8
9	12	7
10	10	5

तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता पहले और दूसरे रुपए को गेहूँ पर, तिसरा रुपया चावल पर व्यय करेगा क्योंकि अब उसे गेहूँ की तुलना में चावल से अधिक उपयोगिता मिल रही है। अब वह चौथे रुपए को गेहूँ पर, पाँचवा रुपया चावल पर, छठा रु और सातवाँ रुपया गेहूँ पर खर्च करेगा। शेष दो रुपयों को चावल और गेहूँ पर व्यय कर दिया जाएगा।

अतः उपभोक्ता अपने इस